भारत सरकार

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

लोक सभा

तारांकित प्रश्न सं. *182

05.08.2024 को उत्तर के लिए

मोरों की मृत्यु

***182. श्री अनिल यशवंत देसाईः**

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या यह सच है कि मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है और हाल ही में वायु सेना स्टेशन, दिल्ली में 25 से अधिक मोरों को मृत पाया गया है;

(ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं; और

(ग) क्या सरकार ने इस घटना की जांच कराई है और यदि हां, तो जांच का ब्यौरा क्या है और इसके लिए जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध क्या कार्रवाई की गई है?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री
(श्री भूपेन्द्र यादव)

(क) से (ग): विवरण सदन के पटल पर रख दिया गया है।

"मोरों की मृत्यु" के संबंध में माननीय संसद सदस्य श्री अनिल यशवंत देसाई द्वारा दिनांक 05.08.2024 को उत्तर के लिए पूछे गए लोक सभा तारांकित प्रश्न सं. *182 के भाग (क) से (ग) के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क) और (ख): भारत सरकार ने मोर को "राष्ट्रीय पक्षी" के रूप में अधिसूचित किया था। वन और वन्यजीवों से संबंधित क्षेत्र स्तर के मामलों का दैनिक प्रबंधन मुख्य रूप से राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों की जिम्मेदारी है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली के वायु सेना स्टेशन पर मोरों की मौत की सूचना मिली थी। मृत्यु के सटीक कारण का पता लगाने के लिए विभिन्न केन्द्रों पर कई शव-परीक्षा और परीक्षण किए गए। एक मोर की शव-परीक्षा रिपोर्ट में लू लगने को मौत का कारण बताया गया था, जबकि दूसरे मोर की शव-परीक्षा रिपोर्ट से स्पष्ट हुआ कि गंभीर रक्त संकुलता (कंजेशन) एवं फेफड़ों तथा आतंरिक अंगों में रक्तस्राव के परिणामस्वरूप आघात या हृदय गति रुकने के कारण मौत हुई थी।

मृत पक्षियों के आंतरिक अंगों के नमूनों को जांच हेतु बरेली स्थित भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई) के वन्यजीव संरक्षण, प्रबंधन एवं रोग निगरानी केन्द्र को भेजा गया था। परीक्षण के परिणामों में पाया गया कि वे पक्षी एवियन इंफ्लुएंजा से पीड़ित नहीं थे।

(ग): एनसीटी दिल्ली सरकार के मुख्य वन्यजीव वार्डन के नेतृत्व में गठित एक दल ने अन्य वन अधिकारियों के साथ मिलकर प्रभावित क्षेत्रों का समग्र रूप से निरीक्षण किया। यह पाया गया कि अधिकतर मोरों की मौत ऐसी क्षेत्रों में हुई थी जहां, तारकोल या कंक्रीट की सतह है, जिसके कारण संभवत: वे पक्षी लू की चपेट में आ गए। उस क्षेत्र में पक्षियों को दवा, आहार और पानी उपलब्ध कराने हेतु उपाय किए गए थे।

****